हर एक को जीने का हक़ चाहिए

सूत्रधार : *(सहायकों समेत आगे जाकर)* हम हिंदोस्तान के साधारण नागरिक हैं।

एक : खेतों में काम करने वाले।

दो : फैक्ट्रियों में काम करने वाले।

तीन : दफ़्तरों में काम करने वाले।

चार : दुकानों में काम करने वाले।

सूत्रधार : क्या तुम्हें जीने का हक़ चाहिए?

एक साथ : हां... हमें जीने का हक़ चाहिए।

सूत्रधार : ये हक़ कौन छीन रहा है?

एक : सरकार चलाने वाले।

दो : इंसाफ की अदालतें चलाने वाले।

तीन : अमन के रखवाले... थाने चलाने वाले।

चार : धर्म के नाम के पर व्यापार चलाने वाले।

सूत्रधार : *(बारी-बारी से)* सरकार तुम्हारे हक़ किस तरह छीन रही है?

एक : काले कानून बनाकर।

सूत्रधार : अदालतें तुम्हारे हक़ किस तरह छीन रही हैं?

दो : बेगुनाहों को सज़ा देकर... गुनहगारों को बरी करके।

सूत्रधार : थाने वाले तुम्हारे हक़ किस तरह छीन रहे हैं?

तीन : झूठे केस बनाकर... लुच्चे, बदमाशों को पनाह देकर।

सूत्रधार : धर्मों वाले तुम्हारे हक़ किस तरह छीन रहे है?

चार : मासूमों के क़त्ल करवाकर... दंगे करवाकर... भाई भाई में नफरत फैलाकर।

सूत्रधार : इसका नतीजा क्या हो रहा है?

एक : देश में बदअमनी फैल रही है।

दो : व्यापार ठप्प हो रहे हैं।

तीन : बेकारी फैल रही है।

चार : मंहगाई शिखरों को छू रही है।

एक : आपाधापी मची है।

दो : कोई किसी का दुख नहीं बंटाता।

तीन : भाई का भाई दुश्मन बन रहा है।

चार : पड़ोसी का एतबार नहीं।

एक : घर से निकलो तो पता नहीं वापिस आएंगे भी या नहीं।

दो : कोई पिस्तौल दिखाकर स्कूटर छीन ले।

तीन : कोई चाकू मारकर घायल कर दे।

चार : कोई बस से उतारकर ऐसे ही मार दे।

एक : यह भी कोई जीना है ?

दो : यह भी कोई जीने का हक़ है ?

तीन : क्या इस जीने में भी कोई आनन्द है ?

चार : क्या यही जीने का दस्तूर है ?

सूत्रधार : तो फिर ?

एक साथ : हमें कुछ करना चाहिए।

सूत्रधार : क्यों ? बता सकोगे ?

एक : हमें जीने का हक़ चाहिए।

दो : तुम्हें जीने का हक़ चाहिए।

तीन : हर एक को जीने का हक़ चाहिए।

चार : सबको जीने का हक़ चाहिए।

सूत्रधार : आओ फिर हक़ की बात छेड़ें।

एक साथ : तुम्हें एक नाटक दिखाएं।
जो सच है उसके रु.ब.रु. करवाएं।

(सूत्रधार एक तरफ तथा बाकी चारों दूसरी तरफ हो जाते हैं। मध्य एक ट्रैफिक सिपाही और एक कोने में रिक्शावाला भइया)

सूत्रधार : यह एक चौक है... ट्रैफिक का सिपाही खड़ा है... ट्रैफिक की सहूलियत के लिए लाल, हरी बत्तियां लगी हैं... पर इन बत्तियों की कोई परवाह नहीं कर रहा... कार निकल गई है... मोटर साइकिल निकल गया... स्कूटर निकल गया... वो सब लाल बत्ती होने पर भी निकल गए हैं... पर ट्रैफिक सिपाही कुछ नहीं कर सका... पर वह

तो खीज़ रहा है। अपनी खीझ किस पर निकाले? उसे एक गरीब रिक्शावाला दीख गया है... वह अपनी रिक्शा एक तरफ़ खड़ी करके साफ कर रहा है... भइया है, परदेश में रोजगार कमाने आया है... कानून के रखवालों के लिए इससे बढ़िया... आसान शिकार और क्या हो सकता है?

(सिपाही उसकी तरफ जाता है।)

सिपाही : अरे सुअर के पुत्तर... ये मां अपनी को यहां क्यों खड़ा किया है?

भइया : हुजूर सवारी का इंतज़ार करे हैं।

सिपाही : अरे यह जगह रिक्शा खड़ी करने के लिए है... सारा ट्रैफिक रोक दिया है।

(एक डंडा मारता है।)

भइया : हुजूर हम तो सड़क के एक तरफ खड़ा है।

सिपाही : साला, आगे बोलता है।

(एक और मारता है।)

भइया : *(चीखकर)* मार दिया हुजूर... बेकुसूर को मार दिया।

सिपाही : साला बेकसूर का।

(एक और मारता है।)

भइया : जुल्म करते हैं हुजूर।

सिपाही : साला जुल्म का।

(एक और मारता है। चारों आपस मे बातें कर रहे हैं।)

एक : बेकार में ही गरीब को मार रहा है।

दो : इनका काम ही यही है।

तीन : अगर भइया रुपया हथेली पर टिका देता तो बच जाता।

चार : रुपये की बात छोड़ो... अब तो पांच-दस से कम बात ही नहीं।

एक : पांच से क्या बनता है?

दो : महंगाई कमर तोड़ रही है।

तीन : प्याज देखो तीस रुपये किलो।

चार : आटा बीस रुपये किलो।

एक : दूध तीस रुपये किलो।

दो : और तो और चाय का एक कप पांच रुपये का है।

तीन : कोई खाए तो क्या खाए?

चार : कोई पिए तो क्या पिए?

(भइया को मार पड़ती है और उसकी चीख निकलती है।)

एक : *(भइया की तरफ ध्यान लगाकर)* पर उस ग़रीब को ख़्वामख़्वाह में मार पड़ रही है।

दो : आओ, उसकी मदद करें... उसे छुड़वाएं।

तीन : उसे छुड़वाएं और खुद मार खाएं।

चार : हम कोई मूर्ख हैं।

तीन : हम भी बाल बच्चेदार हैं।

चार : मैं तो परिवार में अकेला कमाने वाला हूं... दिहाड़ी ना मिले तो भूखे मर जाएं।

एक, दो : *(एक साथ)* ये बात तो ठीक है।

तीन : चल भई, देर हो रही है।

चार : हां टी.वी. का 'टाईम' हो रहा है।

एक : तुमने टी.वी. की बात की... मुझे याद आया आज पाकिस्तानी टी.वी. पर शानदार नाटक आना है।

दो : भई नाटक पाकिस्तान का।

तीन : अपने वालों को नाटक करना कहां आता है?

चार : सारे सिफारिशी भर्ती कर रखें हैं।

(मारने की आवाज़)

एक साथ : देखो कितनी बेरहमी से मार रहा है।

(सिपाही उनकी तरफ आता है वे पीठ घुमा लेते हैं। भइया एक तरफ, सिपाही दूसरी तरफ निकल जाता है।)

सूत्रधार : जिसे सरेआम पीटा गया... क्या वो परदेस से मार खाने आया है... कोई उसकी मदद नहीं करता... हमें प्याज की महंगाई याद आ सकती है... पाकिस्तान का नाटक याद आ सकता है... पर हमारे सामने जो सजीव नाटक हो रहा है... उससे हमने आंखें बंद कर ली हैं... हम भूल गए हैं।

(चारों मुड़कर)

एक : उसका दुख हमारा दुख है।

दो : उसकी पीड़ा हमारी पीड़ा है।

तीन : उसके साथ जो अब हो रहा है... रात को हमारे साथ भी हो सकता है।

चार : जो उसके साथ आज हो रहा है... कल हमारे साथ भी हो सकता है।

एक : इसे जीने का हक़ चाहिए।

दो : हमें जीने का हक़ चाहिए।

तीन : तुम्हें जीने का हक़ चाहिए।

चार : सबको जीने का हक़ चाहिए।

सूत्रधार : यह हमारे नाटक की पहली झांकी है।

एक साथ : ज़िंदगी का नक्शा जो टुकड़ा टुकड़ा हो रहा है।

सूत्रधार : ये चीख़ों की आवाज़ सुन रहे हो... ये दौड़ती हुई घर की बहू आई है... उसके पीछे-पीछे उसका पति है... उसका देवर है... उन्होंने उसे पकड़ लिया है... वो गिर पड़ी है... एक बूढ़ी, जो बोतल पकड़े आई है... यह सास है... देखो तेल छिड़क दिया है... पति ने तीली लगाई है... लड़की के कपड़े जल रहे हैं... लड़की जल रही है।
(सूत्रधार के एक्शन ऐसे हैं, जैसे वो सब कुछ देख रहा है।)

आवाज़ : *(लड़की की)* बचाओ लोगो, बचाओ।

सूत्रधार : पर कोई बचाने वाला नहीं... पड़ोसी छतों पर चढ़कर...
(एक, दो, तीन, चार पड़ोसी बनकर बातें कर रहे हैं।)

एक : बेचारी को मार दिया।

दो : जब से ब्याह कर आई है, तंग कर रहे हैं।

तीन : कहते हैं, दहेज कम लाई है।

चार : सुना है, बाप ने बीस हजार नकद दिए थे।

एक : बीस हजार को कौन जानता है ?

दो : महंगाई ही बहुत है।

तीन : स्कूटर ही पन्द्रह हजार का आता है।

चार : फ्रिज पांच हजार का आता है।

एक : बीस हजार तो इसी में लग गया।

दो : फिर टी.वी. चाहिए।

तीन : टी.वी. का आराम भी तो है... घर बैठे ही पिक्चर देखो।

चार : चित्रहार देखो, नाटक देखो।

एक : एक दुख भरा नाटक वो भी हो रहा है।

दो : लड़की बेचारी जल रही है।

तीन : हम क्या कर सकते हैं ?

चार : पड़ोस का मामला है... लड़ाई थोड़े ही मोल ले सकते हैं।

एक : अब तो घर-घर यही आग है।

दो : कोई स्टोव से जल रही है।

तीन : कोई गैस से जल रही है।

चार : गैस की बात से याद आया... गैस की बड़ी किल्लत हो रही है।

एक : पन्द्रह दिन हो गए हैं... अभी तक सिलेंडर नहीं आया।

दो : अब तो सुना है गैस की ब्लैक होने लगी है।

तीन : रिक्शा वाले को पन्द्रह रुपये दो... सिलेंडर अगले दिन घर पहुंच जाता है।

चार : पर वो देखो लड़की के बालों में आग लग गई है।

एक : सास खड़ी किस तरह देख रही है?

दो : अपनी बेटी नहीं होगी?

तीन : पैसे का लालच बुरा है।

चार : पैसा ही हर जगह प्रधान है।

एक : पैसे से इलेक्शन जीतो।

दो : पैसे से कानून खरीदो।

तीन : पैसे से इंसाफ खरीदो।

चार : पैसे से जहान खरीदो।

(लड़की की 'बचाओ-बचाओ' की आवाज़ आती है। सारे उधर देखते हैं... फिर कुछ पलों बाद बातें शुरू कर देते हैं।)

एक : हां, क्या बात कर रहे थे हम?

दो : पैसे से कानून खरीदो।

तीन : पैसे से इंसाफ खरीदो।

चार : पैसे से जहान खरीदो।

सूत्रधार : और इन बातों के दरम्यान एक लड़की जलकर मर गई है। अमन और कानून के रखवाले पहुंच गए हैं। वे गवाहियां लेना चाहते हैं।

(थानेदार और सिपाही आते हैं।)

थानेदार : *(एक से)* तुम्हारे पड़ोस में एक लड़की जलकर मरी है... तुम्हें कुछ पता है?

एक : जलकर नहीं मरी जी... जलाकर मारी गई है।

थानेदार : अच्छा, फिर तो तुमने सब कुछ आंखों से देखा होगा?

एक : देखा जी... इन आंखों से देखा।

थानेदार : क्या नाम है तुम्हारा?

एक : *(थोड़ा-सा झेंपकर)* नाम पूछकर क्या करोगे?

थानेदार : गवाही के लिए कचहरी में बुलाएंगे।

एक : फिर हमने कुछ नहीं देखा... असल में तो हमारे पड़ोस में कोई

लड़की मरी ही नहीं... क्यों भाई साहब,क्या कोई मरी है ?

दो : नहीं... कोई नहीं मरी।

थानेदार : *(तीन से)* भाई साहब आप किस मकान में रहते हैं ?

तीन : 109 नंबर में।

थानेदार : 108 में एक लड़की की मौत हो गई है... आप कुछ जानते हो ?

तीन : जनाब, अगर 107 वाले नहीं जानते तो फिर मैं कैसे जान सकता हूं ?

थानेदार : *(चार से)* भाई साहब, आप कुछ जानते हैं ?

चार : हां... महात्मा गांधी और उसके तीन बंदरों को... न बुरा बोलते हैं, न बुरा सुनते हैं... न बुरा देखते हैं।

थानेदार : लड़की जलकर मर गई है।

चार : ईश्वर उसकी रूह को शांति दे।

एक साथ : ईश्वर अल्लाह तेरो नाम
सबको सन्मति दे भगवान।

(थानेदार बेबसी में वापिस जाता है।)

सूत्रधार : एक लड़की मर गई... एक बाबुल की बेटी मर गई... सबने देखते-देखते भी कुछ नहीं देखा... सबने सुनते हुए भी कुछ नहीं सुना... कानून के मुताबिक मुकद्दमा सरकार की तरफ से पेश किया गया।

(जज और वकील आते हैं। थोड़ा शोर-शराबा होता है।)

जज : ऑर्डर... ऑर्डर... कोई चश्मदीद गवाह है ?

वकील : मी लॉर्ड... कोई नहीं।

जज : मरने वाली लड़की का कोई बयान ?

वकील : मी लॉर्ड... पुलिस के पहुंचने से पहले वह मर चुकी थी।

जज : मुकद्दमे की बुनियाद ?

वकील : मी लॉर्ड... मां-बाप का बयान, लड़की को ससुराल में आमतौर पर तंग किया जाता था और मायके से पैसा लाने के लिए मजबूर किया जाता था।

जज : कोई ठोस सबूत ?

वकील : मी लॉर्ड कोई नहीं।

(जज कुछ लिखता है... वकील और जज चले जाते हैं)

सूत्रधार : हिंदोस्तान का कानून सबूतों के बल पर टिका है... सबूत है नहीं...इसलिए कातिल बरी कर दिए गए... आप इसमें कुछ नहीं कर सकते ... नहीं... क्यों ? क्योंकि...

एक : तुम्हारे लिए प्याजों का भाव बहुत ज़रूरी है।

दो : दाल-रोटी का चक्कर तुम्हें घर से निकलने नहीं देता।

तीन : बच्चों के दूध की तुम्हें चिंता है।

चार : तुम्हारे घर की गैस खत्म हो गई है।

सूत्रधार : एक लड़की जलकर मर गई... क्या किसी विधान को शर्म आई ?

एक : नहीं।

सूत्रधार : किसी कानून को शर्म आई ?

दो : नहीं।

सूत्रधार : किसी न्याय प्रणाली को शर्म आई ?

तीन : नहीं।

सूत्रधार : क्या 67 करोड़ लोगों की कौम को शर्म आई ?

चार : नहीं।

सूत्रधार : पर धरती को शर्म आ रही है... धरती की बेटियां जलकर मर रही हों... धरती मां कैसे खुश रह सकती है... इसलिए यह धरती कुम्हला रही है... जो लड़की जलकर मरी... क्या उसे जीने का हक़ नहीं चाहिए ?

एक : उसे जीने का हक़ चाहिए।

दो : तुम्हें जीने का हक़ चाहिए।

तीन : हमें जीने का हक़ चाहिए।

चार : हर एक को जीने का हक़ चाहिए।

सूत्रधार : ये थी हमारे नाटक की दूसरी कहानी... जो देश के कानून का करती दूध का दूध, पानी का पानी... पर यहां तो हर सड़क पर कहानी, हर मोड़ पर कहानी और अब सुनो इस सड़क की कहानी।

एक : यह सड़क चल रही थी।

दो : यहां से कारें निकल रही थीं।

तीन : स्कूटर निकल रहे थे।

चार : साइकिल निकल रहे थे।

एक : पर अब यह बंद है।

दो : यहां तंबू कनात लगे हुए हैं।

तीन : बिजलियां जगमगा रही हैं।

चार : लीडर साहब की बेटी की शादी है।

एक : सत्ताधारी पार्टी के आदमी हैं।

दो : वह पार्टी जो महात्मा गांधी के नाम की सौगंध लेती है।

चार : महात्मा गांधी जो लंगोटी में रहता था।

तीन : महात्मा गांधी जो सादगी का प्रचार करता था।

एक : वह कहता था, अगर तुम्हारे पास दौलत है.... ।

दो : तो उसका ओछा दिखावा मत करो।

तीन : क्योंकि यह दिखावा गरीब को तकलीफ पहुंचाता है।

चार : उसकी दुखती रग को और दुखाता है।

सूत्रधार : Vusgav display of Wealth is a sin against society-
दौलत का ओछा प्रदर्शन समाज के विरुद्ध एक पाप है।
(एक गरीब सा आदमी आता है। उसकी आंखें चुंधिया रही हैं।)

एक साथ : भले आदमी... क्या देख रहा है ?

गरीब : रोशनियां देख रहा हूं।

एक साथ : क्यों ?

गरीब : इसलिए बेटो कि अपनी झोंपड़ी के अंधेरे को याद कर सकूं।

सूत्रधार : हां, अगर इस रोशनी का हजारवां हिस्सा भी इस झोंपड़ी के हिस्से आ सके, तो इस झोंपड़ी में उम्रभर के लिए प्रकाश हो सकता है... अगर इस रोशनी का सौवां हिस्सा भी गरीबों की बस्ती तक पहुंच जाए तो अंधेरे में डूबी बस्ती सदा के लिए रोशन हो जाए और यह रोशनी जो यहां जगमगा रही है... गरीब आदमी को दुखी करने के लिए... उसे याद दिलाने के लिए कि...

एक : उसकी झोंपड़ी में अंधेरा है।

दो : उसकी बस्ती में अंधेरा है।

तीन : उसकी ज़िंदगी में अंधेरा है।

चार : उसकी दुनिया में अंधेरा है।

सूत्रधार : और ये हैं जो अंधाधुंध जगमगाहट करके अमीरी का दिखावा कर रहे हैं।

एक : लोगों की रोशनी पर डाका डाल रहे हैं।

दो : ये ही हर रोज़ टी.वी. पर प्रचार करते हैं।

तीन : 'रोशनी के व्यापारी' प्रोग्राम दिखाते हैं।

चार : रोशनी चुराने वाले ही रोशनी के व्यापारी बन बैठते हैं।
(बाबा रोशनियों की तरफ देखे जा रहा है।)

सूत्रधार : बाबा, क्या देख रहा है ?

गरीब : सरदार जी, यहां क्या हो रहा है ?

सूत्रधार : कोठी वालों की बेटी की शादी है।

गरीब : *(आह भरकर)* अच्छा, सुखी बसे।

सूत्रधार : पर बाबा, बात क्या है?

गरीब : मुझे मेरी बेटी की याद आ गई।

सूत्रधार : क्यों, ऐसी क्या बात है?

गरीब : मैं अभी तक अपनी बेटी के हाथ पीले नहीं कर सका।

सूत्रधार : क्यों बाबा?

गरीब : शादी के लिए पैसे जोड़े थे... वो बीमारी में लग गए।
(आंसू पोंछते हुए जाता है।)

सूत्रधार : जिस देश में ये हालात हो...

एक : करोड़ों लोगों को दो वक़्त की रोटी नसीब न हो।

दो : लाखों बेटियां दहेज के अभाव में जलाई जा रही हों।

तीन : करोड़ों लोगों के सिर पर छत न हो।

चार : सड़कों पर करोड़ों बेरोजगार घूम रहे हों।

सूत्रधार : वहां इन लोगों को क्या हक़ बनता है कि अमीरी का ऐसा भोंडा प्रदर्शन करें।

एक : ये लोग जो विधानसभाओं के मैंम्बर हैं।

दो : ये लोग जो महात्मा गांधी का खद्दर पहनते हैं।

तीन : ये लोग जो लोगों को रास्ता दिखाने वाले हैं।

चार : ये लोग जो लोकसेवा का दावा करते हैं।

एक : इन्हें शर्म नहीं आती?

दो : इन जैसे दूसरों को शर्म नहीं आती?

तीन : इन्हें शर्म दिलानी पड़ेगी।

चार : इनकी पीठ पर आक उगानी पड़ेगी।

एक : यह धरती हमारी है।

दो : हमें जीने का हक़ चाहिए।

तीन : तुम्हें जीने का हक़ चाहिए।

चार : हर एक को जीने का हक़ चाहिए।

सूत्रधार : और यह थी ज़िंदगी की एक और तस्वीर।

एक : जहां कोई अत्यंत गरीब।

दो : कोई ओछा अमीर।

तीन : पर अभी उठना नहीं।

चार : यह नहीं है नाटक का अंत।

(एक, दो, तीन, चार पीठ घुमाते हैं।)

सूत्रधार : और यह है पंजाब।

(एक, दो, तीन, चार बारी-बारी से मुड़ते हैं।)

एक : पांच नदियों की धरती।

दो : जो अब तीन नदियों की रह गई है।

तीन : अगर हवा इसी तरह चलती रही।

चार : तो दो नदियों की रह जाएगी।

सूत्रधार : यहां क्या हो रहा है?

एक : दिन-दहाड़े क़त्ल हो रहे हैं।

दो : बैंक लूटे जा रहे हैं।

तीन : पैट्रोल पम्प लूटे जा रहे हैं।

चार : लोग लूटे जा रहे हैं।

सूत्रधार : लग इस तरह रहा है-

एक : गुण्डों का राज है।

दो : समाज-दुश्मन यहां के सरदार हैं।

तीन : धर्म स्थान कातिलों के पनाहगार हैं।

चार : थानों में जुल्म अपार है।

सूत्रधार : ये वो धरती है, जिसने...

एक : नानक जैसा दरवेश दिया।

दो : जिसने भाईचारे का उपदेश दिया।

तीन : 'कौण भले को मंदे' का उपदेश दिया।

चार : झूठ के खिलाफ संघर्ष का संदेश दिया।

सूत्रधार : पर आज इस धरती पर...

एक : भाईचारा नहीं, नफरत प्रधान है।

दो : जो चौधरी, जो नेता, वो शैतान है।

तीन : सच छुप गया, झूठ की शान है।

चार : यहां जीना मुश्किल, मरना आसान है।

सूत्रधार : एक तरफ मोर्चा दूसरी तरफ सरकार है।

(खालसा और सरकार आते हैं।)

सूत्रधार : खालसा जी, आप क्या चाहते हो?

खालसा : हम चाहते हैं सरकार हमारी मांगे माने... हम समझते हैं कि सिक्ख

धर्म, सिक्ख संस्कृति, सिक्ख सदाचार खतरे में हैं।

एक : पर देश का प्रधान सिक्ख है।

दो : पंजाब के बहुत से ज़िलों के डी.सी. सिक्ख हैं।

तीन : सिक्ख ऊंची पदवियों पर हैं।

चार : बहुत से ज़िलों के एस.एस.पी. सिक्ख हैं।

खालसा : हम उन्हें सिक्ख नहीं मानते... वे चमचे हैं।

सूत्रधार : *(तंज़ अंदाज में)* फिर सिक्ख कौन हैं ?

एक : जो बेगुनाहों का कत्ल करें।

दो : किसी पान वाले गरीब का टखना उतार दें।

तीन : बसों में सफर कर रहे मुसाफिरों का खून करें।

चार : मंदिरों में मूर्तियों को आग लगाएं।

खालसा : इसकी जिम्मेदारी हमारे पर नहीं आती... ये सरकार के एजेंटों का काम है... जो हमें बदनाम करना चाहते हैं।

एक : पर वे पकड़े क्यों नहीं जाते ?

खालसा : सरकार से पूछो।

दो : सरकार कहती है... वे गुरुनानक निवास में छुपे बैठे हैं।

खालसा : गुरुनानक निवास में वे उड़कर नहीं आ जाते।

तीन : सरकार आपको लिस्ट देती है... आप पकड़वा दो।

खालसा : हम सरकार के नौकर नहीं हैं।

चार : पंजाब तबाह हो रहा है।

खालसा : इसके लिए सरकार जिम्मेदार है।

एक : व्यापार तबाह हो रहा है।

खालसा : झूठ का व्यापार खत्म हो जाए तो अच्छा है।

दो : लोग भूखे मर रहे हैं।

खालसा : हमारे पास आ जाएं... गुरु का लंगर जारी है।

तीन : इस बारे आपकी भी कुछ जिम्मेदारी है।

खालसा : हम जिम्मेदारी निभा रहे हैं।

चार : वो किस तरह ?

खालसा : मोर्चा लगाकर... इसमें हमारी मांगें नहीं हैं, पंजाब की मांगें हैं... हिन्दुओं और सिक्खों की साझा मांगें हैं... अगर कोई ना समझे तो हमारा क्या कसूर है।

सूत्रधार : तो इनकी जिम्मेदारी मोर्चा लगाना है... और वो इन्होंने लगा रखा है।

एक : क़त्ल हो रहे हैं, इनकी ज़िम्मेदारी नहीं।

दो : दहशत फैल रही है... इनकी ज़िम्मेदारी नहीं।

तीन : लूट-खसोट हो रही है... इनकी ज़िम्मेदारी नही।

चार : नफरत फैल रही है... इनकी ज़िम्मेदारी नही।

सूत्रधार : आ आ फिर उनसे मिलें... जिनके हाथों में इनकी बागडोर है।

एक : जनाब, आप इस देश की सरकार चला रहे हो?

सरकार : लोगों ने हमें चुना है कि हम सरकार चलाएं।

दो : लोगों के मसले हल करना किसकी ज़िम्मेदारी है?

सरकार : हमारी ज़िम्मेदारी है।

तीन : पंजाब का मसला... असम का मसला... ये हल क्यों नहीं हो रहे?

सरकार : धीरे-धीरे हो जाएंगे।

चार : अभी क्यों नहीं होते?

सरकार : पहले हम एशियाई खेलों में उलझे हुए थे... फिर गुटनिरपेक्ष कांफ्रेंस आ गई... फिर हमारे प्रधानमंत्री को यूएनओ जाना पड़ गया... फिर कॉमनवेल्थ देशों की कांफ्रेंस आ गई।

एक : आप दुनिया के मसले सुलझा सकते हो... पर अपने लोगों के नहीं?

सरकार : दुनिया बड़ी चीज़ है... अपने लोग, अपने लोग हैं।

दो : देश तबाह हो रहा है?

सरकार : तबाह हो गया तो फिर उभर जाएगा... ये तबाही और निर्माण तो चलते रहते हैं।

तीन : लोग क़त्ल हो रहे हैं?

सरकार : हिंदोस्तान की आबादी बहुत है... खत्म नहीं होगी।

चार : क़ातिलों को पकड़ते क्योंनहीं?

सरकार : ज़रूरी कदम उठा लिए गए हैं, हर चौक पर चार तरह की फोर्स खड़ी कर दी गई है... बी.एस.एफ., सी.आर.पी., पी.ए.पी, पी.पी.।

एक : ये पुलिस किसलिए खड़ी है?

सरकार : ताकि लोगों की जानमाल की रखवाली करे।

दो : *(तंज़ लहजे में)* हां, लोगों का माल छीने और बैग में डाल ले।

सरकार : मैं समझा नहीं।

तीन : रिपोर्ट मिली हैं कि क़त्ल के वक़्त तो पुलिस कहीं ढूंढने से भी नहीं मिलती, वारदात से घंटा भर बाद ज़रूर पहुंच जाती है।

चार : चौक पर स्कूटर खड़ा करके दस रुपये ज़रूर झपट सकती है।

एक : मोटर साइकिल वाले को आतंकवादी कहकर सौ रुपये अपनी जेब में डाल सकती है।

सरकार : इस बाबत हमने हिदायतें दे दी हैं।

दो : क्या ?

सरकार : कि पुलिस वाले साधारण लोगों को तंग न करें।

तीन : पर आप बातचीत करके सब मसलों का हल क्यों नहीं करते ?

सरकार : सियासत में किसी भी बात को निपटाया नहीं जाता।

चार : *(तंज़ के साथ)* बल्कि मसले को लटकाया जाता है।

एक : ताकि लोग उलझें रहें।

दो : एक दूसरे के ख़िलाफ़ बोलते रहें।

तीन : वाद-विवाद होता रहे।

चार : और आपकी दुकानदारी चलती रहे।

सरकार : भई यह तो सियासत के खेल का हिस्सा है... *(पासा फेंकने की मुद्रा में मूक हो जाता है।)*

सूत्रधार : *(दर्शकों से)* तो अब आपने देख लिया... ज़िम्मेदार लोगों से मिल लिए... वे क्या सोचते हैं, जान लिया... वे जो खेल खेल रहे हैं, देख लिया... वे जो चाल चल रहे हैं... समझ ली, अब आपका भी कुछ फर्ज़ बनता है।

(एक, दो, तीन, चार दर्शकों को संबोधित करके)

एक : क्या आपने खुद को प्याज की मंहगाई तक सीमित कर लिया है।

दो : क्या आप चाय के प्याले के वक़्त ही सियासत के बारे में सोचोगे ?

तीन : क्या आप अख़बारों की सुर्खियां पढ़कर चुप हो जाओगे ?

चार : क्या आप क्रिकेट कमेंटरी और टीवी नाटकों तक ही खुद को महफूज रखोगे ?

एक : तुम्हें सोचना पड़ेगा।

दो : तुम्हें विचारना पड़ेगा।

तीन : तुम्हें जानना पड़ेगा।

चार : तुम्हें समझना पड़ेगा।

सूत्रधार : ये जो खेल खेला जा रहा है...

एक : इसमें हमारी तुम्हारी मौत है।

दो : हमारे-तुम्हारे भविष्य की मौत है।

तीन : हमारे-तुम्हारे बच्चों की मौत है।

चार : हमारे-तुम्हारे इस देश की मौत है।

सूत्रधार : आओ अपने घरों से बाहर निकलें...

एक : सिरों से सिर जोड़े।

दो : बाजुओं से बाजू मिलाएं।

तीन : हाथों से हाथ मिलाएं।

चार : कदम के साथ कदम बढ़ाएं।

सूत्रधार : और यह देखें...

एक : किसी गरीब को तगड़े हाथों से मार पड़ रही हो तो चुप न रहें।

दो : कोई बेटी दहेज के लोभियों के हाथों जलाई जा रही हो तो तमाशाई न बने रहें।

तीन : दौलत का ओछा प्रदर्शन हो रहा हो तो पास से थूककर निकलें।

चार : दंभ की सियासत का खेल खेलने वालों के विरुद्ध रोष प्रकट करें।

सूत्रधार : ये नफ़रत की राजनीति की आग फैलाने वाले, ये दंभ की सियासत चलाने वाले, ये पंथों वाले, ये सरकारों वाले, ये दरबारों वाले... ये सब पलीतेबाज हैं, जो आग लगाकर खुद दीवारें फांद जाते हैं।

एक : इनको दुत्कारें।

दो : इनको फटकारें।

तीन : लट्ठ मारकर भगाएं।

चार : इन्हें मुंह न लगाएं।

सूत्रधार : इनके विरुद्ध इकट्ठे होकर आवाज़ बुलंद करें।

एक : यह सच का रास्ता है।

दो : यही मानवता का रास्ता है।

तीन : यही न्याय का रास्ता है।

चार : यही ज़िंदगी का रास्ता है।

सूत्रधार : और यही आज की मानवता का युग धर्म है।

(वक़्फा)

आओ इस युद्ध को लड़ें।

एक : हमें जीने का हक़ चाहिए।

दो : तुम्हें जीने का हक़ चाहिए।

तीन : हर एक को जीने का हक़ चाहिए।

चार : सबको जीने का हक़ चाहिए।